R

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत विशारद (बी.ए.) – नियमित

परीक्षा : जून–जुलै – २०२२

सत्र २ रे

विषयः श्रीमद्भगवद्गीता(19R425)

दिनांक :०९/०७/२०२२ **गुण : ६०** **वेळ : स. १०.०० ते दु. १२.३०**

सूचना : सर्व प्रश्न अनिवार्य

प्र.१. **अनुवादेन सह स्पष्टीकरणं कुरुत। (केऽपि त्रयः)** **(१८)**

१. कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।

२. अन्तवन्त इमे देह नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।

३. यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर।।

४. बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।।

५. असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

प्र.२. **अधोनिर्दिष्टेषु द्वौ प्रश्नावुत्तरत। (२)** **(२४)**

१. भगवद्गीतायाः द्वितायाध्याये वर्णितस्य शरीरात्मविवेकस्य विवेचनं कुरुत।

२. तृतीयाध्याये वर्णितं संकल्पनाद्वयं विवृणुत – यज्ञार्थं कर्म तथा च लोकसंग्रहार्थं कर्म।

३. ईश्वरस्य जन्मनः कर्मणः च दिव्यत्वं स्पष्टीकुरुत।

प्र. ३. **टिप्पण्यौ लिखत। (२)** **(१२)**

१. इंद्रियनिग्रहस्य महत्त्वम्। २. पुष्पिता वाक्।

३. कामक्रोधयोः विनाशकारित्वम्। ४. योगभ्रष्टः।

प्र.४. **कंसस्थितेषु समुचितपर्यायं विचिनुत।** **(०६)**

१. न हि .... सदृशं पवित्रमिह विद्यते। (ज्ञानेन / कर्मेण / श्रमेण)

२. शिष्यस्तेहं .... मां त्वं प्रपन्नम्। (पाठय/शाधि/ शिक्षण)

३. लोकेऽस्मिन् .... निष्ठा। (द्विविधा / त्रिविधा / चतुर्विधा)

४. परित्राणाय .... । (साधूनाम् / मूढानाम् / अज्ञानाम्)

५. नैनं .... शस्त्राणि। (छिन्दन्ति / क्लेदयन्ति / शोषयन्ति)

६. .... च भाषसे। (प्रज्ञावादान् / पण्डितवादान् / जल्पवादान्)